02 / 01 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

विश्व परिवर्तन की जिम्मेवारी- संगमयुगी ब्राह्मणों

द्वारा लाइट - माइट स्वरूप **का अनुभव**

➢➢ मै आत्मा चैतन्य दीपक हूँ

➳ _ ➳ चारों ओर विश्व को रोशनी फैलाती हूँ

➳ _ ➳ मुझ दीपक का

➳ _ ➳ डायरेक्टसम्बंध एक जागति ज्योति से हैं

→ मुझ आत्मा रुपी दीपक से विश्व का

→ अंधकार मिट रहा हैं

→ चारो ओरसे रोशनी की झलक आ रही हैं

→ मुझ चैतन्य दीपक रुपी किरणों से फैलती

→ सारे विश्व पर छत्रछाया हैं

→ मुझ आत्मा को लाइट माइट स्वरूप की अनुभूति होती हैं

◆ मै आत्मा शक्तिशाली स्वरूप धारी हूँ

◆ लाइट स्वरूप हूँ

◆ माइट स्वरूप हूँ

◆ स्व स्वरूपधारी हूँ

◆ सेवा धारी हूँ

- स्व स्वरूप से निरन्तर
- सेवा कर रही हूँ

➢➢ मै आत्मा मास्टर स्नेह सागर हूँ

➳ _ ➳ मुझ आत्मा द्वारा अनेको को

➳ _ ➳ स्नेह से भरपूर कर रही हूँ

➳ _ ➳ विश्व की आत्माएं मुझ आत्मा को

➳ _ ➳ स्नेह दृष्टि से देख रही हैं

→ मुझ आत्मदीपक की रोशनी में

→ तड़फ़ती - भटकती आत्माएं रुहानियत की

→ अनुभूति कर रही हैं

→ स्नेही बन परमात्म

◆ प्यार का अनुभव

◆ कर रही हैं

- बाप के प्यार में
- मगन हो रही है

➢➢ मै जिम्मेवार आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मुझ जगे हुए दीपक पर

➳ _ ➳ सारे विश्व का अंधकार मिटाने

➳ _ ➳ की जिम्मेवारी हैं

→ मै ब्राह्मण आत्मा जगी हुई आत्मा हूँ

→ मुझ ब्राह्मण आत्मा का जगना

→ सारे विश्व को जगाना हैं

→ सारे विश्व में रोशनी फैलाना हैं

→ मै आत्मा दिन से रात

→ रात से दिन बनाने वाली

→ मुझ दीपक की रोशनी हर आत्मा को मिल रही हैं

◆ चैतन्य दीपक हूँ

- मुझ दीपक की रोशनी
- हर आत्मा को मिल रही हैं

➢ मै आत्मा ताजधारी हूँ

➳ _ ➳ विश्व परिवर्तन की

➳ _ ➳ जिम्मेवारी का ताज

➳ _ ➳ मुझ आत्मा ने धारण किया

→ मै निरन्तर ताजधारी हूँ

→ विश्व राज्य अधिकारी आत्मा हूँ

→ अथक सेवाधारी हूँ

→ मै आत्मा अपनी जिम्मेवारी

→ निरन्तर निभाती हूँ

→ मुझ आत्मा में ताजधारी बनने के संस्कार है

→ मुझ आत्मा की ताजपोशी हो रही है

- मेरा ताजधारी चित्र देख रही हूँ
- मै आत्मा बचपन से ही ताजधारी हूँ
- मै श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ
- मरजीवा आत्मा हूँ
- जिम्मेवारी का ताज

• धारण कर रही हूँ

• मै आत्मा दृढ़ संकल्प धारी हूँ

➳ _ ➳ ब्राह्मण बन ताजपोशी का दिन मना रही हूँ

➳ _ ➳ दृढ़संकल्प धारी आत्मा हूँ

➳ _ ➳ दृढ़ संकल्प की फिटिंग से मेरा ताज सदा

→ के लिए सेट हैं

→ बापदादा मुझ आत्मा को देख हर्षित हो रहे हैं

- वाह मेरे बच्चे वाह
- वाह ताज वाह
- वाह बाबा वाह

➢ मै अव्यक्त रूपधारी आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मै आत्मा अपने चैतन्य साकार रूप की अनुभूति

➳ _ ➳ मधुबन में कराती रहती हूँ

→ मै ब्राह्मण आत्मा मधुबन में

→ आकारी ब्राह्मण, ब्रह्मा से साकारी रूप की

→ साकार चरित्र की अनुभूति कर रही हूँ

- साकार रूपधारी ब्रह्मा का
- यह अनुभव अन्य आत्मा को भी करा रही हूं
- मुझ आत्मा के स्नेह के जादू स

• आकार भी साकार बन जाता हैं